एक रपट
सखी-समावेश

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं, तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन जलनी चाहिए।

अनजाने में ही एक आग जो दिलों के भीतर जल उठी है। एक सखी के शब्दों में "इन पांच दिनों में मेरी कविता का पैटर्न बदल गया।"

कविता का पैटर्न बदल जाना छोटी बात नहीं है। कविता हमारे दिल के विचारों से सीधा संबंध रखती है। अगर इस शिविर में ऐसा कुछ हुआ है तो अवश्य कुछ खास था।

परिचय के बाद चर्चा शुरू हुई।

"लड़कियां अपनी आयु के लड़कों के मुकाबले में शारीरिक दृष्टि से ज़्यादा ताक़तवर होती हैं लेकिन परिवार में बरती जाने वाली असमानता की वजह से कमज़ोर हो जाती हैं।"

"माता-पिता लड़के की अपेक्षा लड़कियों पर ज़्यादा पाबंदियां लगाते हैं। यह एक डर के कारण होती हैं क्योंकि लड़की का शारीरिक शोषण भी किया जा सकता है। हमारा समाज ऐसा है कि यदि किसी के साथ बलात्कार हो जाता है तो उस लड़की को इसकी सज़ा पूरी जिंदगी भुगतनी पड़ती है। इसके लिए दोषी भी लड़की को ठहराया जाता है। इन सब सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए माता-पिता को दोषी मानना अनुचित है।"

हम श्रंगार क्यों करती हैं?

"श्रंगार करने में हम खुद में कुछ ज़्यादा आत्म-विश्वास महसूस करती हैं।"

"श्रंगार कभी-कभी दूसरों को आकर्षित करने के लिए भी किया जाता है।"

एक नाटक जिसमें सभी ने भाग लिया—विषय था "परिवार में मां का आर्थिक योगदान।"

पूरी तरह बहस करने के बाद सभी को यह अहसास हो गया था कि अन्य योगदानों के साथ ही मां (नौकरी न करने वाली) का आर्थिक योगदान भी पिता से कम नहीं होता है।

पहले ही दिन एक महत्वपूर्ण प्राप्ति यह रही कि हमें विश्वास हुआ कि हम भी नाटक बना सकती हैं। नाटक घर पर कड़ी मेहनत करने वाली ऐसी लड़की पर आधारित था जिसे मिलने वाली सुविधाएं नगण्य हैं। दूसरे दिन सुझाव आया कि कथानक को आगे बढ़ाने के लिए लड़की का रिजल्ट प्रथम लाएं। बतौर नाटक सबने इसे मान लिया लेकिन इससे कोई सहमत नहीं हो पाया। माहवारी पर स्लाइड शो देखा गया। संस्कारों की वजह से सबने काफ़ी शर्म महसूस की। शिविर में आयुर्वेद के सरल उपचारों पर चर्चा की गई। फ्यूज़ जोड़ना, प्रेस तथा ट्यूब लाइट ठीक करने की जानकारी दी गई।

प्रतीक्षा ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया—"हम यह नाटक क्यों कर रही हैं?

"जब हम अपने पर हो रहे अन्याय का विरोध नहीं कर पा रही हैं तो हमें क्या हक़ है कि हम नाटक में, बहस में दूसरों से चिल्ला-चिल्ला कर कहें कि अन्याय का विरोध करना चाहिए। यदि

मैं ऐसा करती हूं तो क्या दूसरों को और अपने आप को धोखा देना नहीं होगा।''

इससे कुछ उलझाव की स्थिति पैदा हुई। फिर कुछ बातें साफ हुईं।

कांचन—''हम ये क्यों समझें कि हम दूसरों को समझा रही हैं। नाटक स्वयं को समझाने का एक माध्यम हो सकता है।''

स्याम भाई—''वैसे हमें इतनी दूर जाने की ज़रूरत नहीं। हम यह देखें कि क्या हमें नाटक करने में मज़ा आता है? यदि आता है तो इसकी शुरुआत मनोरंजन के तौर पर कर सकते हैं।''

वागीश भाई—''इस प्रश्न का उठना ही विरोध की शुरुआत है।''

रोज़गार संबंधी जानकारी दी गई। प्रश्न उठा

औरतों को नौकरी करने की क्या ज़रूरत है?

सखियों का उत्तर था कि आर्थिक रूप से सक्षम होने पर अपने पैरों पर खड़े होने का आत्मविश्वास होता है। साथ ही किसी पर आश्रित नहीं होने के कारण अपनी बात बिना किसी दबाव में आए कही जा सकती है।

इसके बाद खिलौने और माथापच्ची का सत्र हुआ। मज़ा तो बहुत आया मगर समय की कमी की वजह से अधूरापन रहा।

शिविर की समीक्षा हुई। सभी को लगा कि 5 दिन का समय कम था। आगे ज़्यादा समय होना चाहिए। साथ ही उस तरह के समावेश में मूर्तिकला, क्राफ्ट, खेल आदि को भी प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया।

सखियों के अनुरोध पर गायत्री मंदिर और लघाटे के निवास पर नाटक करने की बात तय हुई। रिहर्सल करने की शुरुआत से पहले ही किसी ने हंसना शुरू किया। पूरे दस मिनट तक हंसी का दौर चलता रहा। बाद में फिर गायत्री मंदिर और लघाटे निवास के पास की बस्ती में नाटक किया गया। लघाटे निवास की बस्ती के लोगों ने नाटक पसंद किया और उससे अपनी सहमति भी दर्शाई।

गायत्री मंदिर के पास एक महिला ने कहा– "मैं खुद अपनी लड़की और लड़के में भेदभाव करती हूं। शायद इसी वजह से मेरा लड़का बड़ा शरारती हो गया है। लेकिन अब मैं अपनी लड़की के साथ अच्छा व्यवहार करूंगी।"

महिला का कथन, शोभा दीदी से नाटक करने का अनुरोध, वागीश भाई द्वारा नाटक की सच्ची प्रशंसा और अनु दीदी का खुश होकर सब पर गुलाल छिड़कना। "अनायास ही स्मृति में इन सब को संजोकर रख लिया है। जानती हूं हमेशा ऐसा नहीं होगा परंतु उससे जो ऊर्जा मिली है और मिलेगी वह अर्थहीन तो नहीं।"

चेतना की दिशा में बढ़ते हुए असंख्य कदमों में एक कदम हमने भी मिलकर विश्वास के साथ बढ़ाया है। आगे... और आगे बढ़ाने के लिए।

प्रतीक्षा तिवारी
एकलव्य—राधागंज, देवास, म.प्र.

□